

बिहार लोक सेवा आयोग - रणनीति

रणनीति की आवश्यकता क्यों?

- बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में सफलता सुनिश्चित करने के लिये उसकी प्रकृति के अनुरूप उचित एवं गतिशील रणनीति बनाने की आवश्यकता है। यह वह प्रथम चरण है, जिससे आपकी आधी सफलता सुनिश्चित हो जाती है।
- यह परीक्षा सामान्यतः तीन चरणों (प्रारंभिक, मुख्य एवं साक्षात्कार) में आयोजित की जाती है, जिसमें प्रत्येक अगले चरण में पहुँचने के लिये उससे पूर्व के चरण में सफल होना आवश्यक है।
- इन तीनों चरणों की परीक्षा की प्रकृति एक-दूसरे से भिन्न होती है। अतः प्रत्येक चरण में सफलता सुनिश्चित करने के लिये अलग-अलग रणनीति बनाने की आवश्यकता है।

प्रारंभिक परीक्षा की रणनीति:

- किसी भी प्रकार की प्रतस्पर्धा में विजिता वही होता है, जिसने अपनी तैयारी शुरुआत से की हो। इस दृष्टि से अभ्यर्थियों के लिये उचित होगा कि वे सर्वप्रथम प्रारंभिक परीक्षा के पाठ्यक्रम का अध्ययन करें एवं उसके समस्त भाग एवं पहलुओं को ध्यान में रखते हुए सुविधा एवं रुचि के अनुसार वरीयता क्रम निर्धारित करें।
- तत्पश्चात् विगत 5 से 10 वर्षों में प्रारंभिक परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों का सूक्ष्म अवलोकन करें और उन बटुओं तथा शीर्षकों पर ज़्यादा ध्यान दें, जिनसे विगत वर्षों में प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति ज़्यादा रही है।
- इस अवलोकन से यह अंदाजा लगाना आसान हो जाएगा कि परीक्षा के अनुरूप कनिष्ठ खंडों पर अपनी अवधारणात्मक एवं तथ्यात्मक जानकारी मज़बूत करनी है।
- अन्य राज्य लोक सेवा आयोगों की भाँति बिहार लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक परीक्षा में भी प्रश्नों की प्रकृति विस्तृत (बहुविकल्पीय) प्रकार की होती है। अतः इसमें तथ्यों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। जैसे- 'मौर्य वंश' का वास्तविक संस्थापक कौन था?, कौन-सी नदी 'बिहार के शोक' के नाम से जानी जाती है?, 'रकैट्स' नामक रोग किस विटामिन की कमी से होता है? इत्यादि।
- इन प्रश्नों को याद रखने और हल करने का सबसे आसान तरीका है कि विषय की तथ्यात्मक जानकारी से संबंधित संक्षिप्त नोट्स बना लिये जाएँ और उसका नियमित अध्ययन किया जाए। जैसे- एक प्रश्न पूछा गया कि भारतीय संविधान का कौन-सा भाग पंचायती राज व्यवस्था से संबंधित है? तो आपको भारतीय संविधान के समस्त 22 भागों के प्रमुख शीर्षकों की एक सूची तैयार कर लेनी चाहिए।
- बिहार राज्य विशेष के संदर्भ में ऐतिहासिक घटनाक्रम, स्वतंत्रता संग्राम में बिहार की भूमिका और भूगोल विषय में भारत एवं बिहार के भूगोल का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसी प्रकार प्रारंभिक परीक्षा के पूरे पाठ्यक्रम का बिहार राज्य के संदर्भ में अध्ययन करना लाभदायक रहता है।
- करेंट अफेयर्स के प्रश्नों की प्रकृति और संख्या को ध्यान में रखते हुए आप नियमित रूप से दृष्टि वेबसाइट पर उपलब्ध करेंट अफेयर्स के बटुओं का अध्ययन कर सकते हैं। इसके अलावा इस खंड की तैयारी के लिये मानक मासिक पत्रिका 'बिहार करेंट अफेयर्स' और 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' का अध्ययन करना लाभदायक सिद्ध होगा।
- प्रारंभिक परीक्षा तिथि से सामान्यतः 15-20 दिन पूर्व प्रैक्टिस पेपर्स एवं विगत वर्षों में प्रारंभिक परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों को निर्धारित समय सीमा (सामान्यतः दो घंटे) के अंदर हल करने का प्रयास करना लाभदायक होता है। इन प्रश्नों को हल करने से जहाँ विषय की समझ विकसित होती है, वहीं इन परीक्षाओं में दोहराव (रिपीट) वाले प्रश्नों को हल करना आसान हो जाता है।
- बी.पी.एस.सी. की प्रारंभिक परीक्षा में नेगेटिव मार्किंग (एक चौथाई - 1/4 अंक) का प्रावधान होने के कारण किसी भी प्रश्न को अनुमान के आधार पर

हल करने का प्रयास न करें। जनि प्रश्नों के उत्तर पूरी तरह से ज्ञात हों उनको पहले हल करें। जनि प्रश्नों पर शंका हो उन्हें बाद में हल करने का प्रयास करें।

मुख्य परीक्षा की रणनीति:

- बी.पी.एस.सी. की मुख्य परीक्षा की प्रकृति विरणात्मक एवं वस्तुनिष्ठ (वैकल्पिक) होने के कारण इसकी तैयारी की रणनीति प्रारंभिक परीक्षा से अलग होती है।
- प्रारंभिक परीक्षा की प्रकृति जहाँ क्वालफाइंग होती है, वहीं मुख्य परीक्षा में सामान्य अध्ययन और नबिंध में प्राप्त अंकों को अंतिम मेधा सूची में जोड़ा जाता है। अतः परीक्षा का यह चरण अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं नरिणायक होता है।
- सामान्य हदिी का प्रश्नपत्र केवल क्वालफाइंग (कम से कम 30 अंक प्राप्त करना अनविर्य) होता है, लेकिन परणाम की दृष्टि से इस परीक्षा में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि इसमें असफल होने वाले अभ्यर्थियों की शेष प्रश्नपत्र की उत्तर-पुस्तिका का मूल्यांकन ही नहीं किया जाता है। इसी तरह वैकल्पिक वषिय को भी क्वालफाइंग कर दिया गया है।
- सामान्य हदिी में क्वालफाइंग अंक प्राप्त करने के लिये हदिी के व्याकरण (उपसर्ग, प्रत्यय, वलिोम इत्यादि) की समझ, संक्षिप्त सार, अपठित गद्यांश इत्यादि की अच्छी जानकारी आवश्यक है। इसके लिये हदिी की स्तरीय पुस्तकें जैसे- वासुदेवनंदन, हरदेव बाहरी द्वारा लिखित पुस्तकों का अध्ययन लाभदायक रहेगा। इसके अतिरिक्त दृष्टि पब्लिकेशंस की 'सामान्य हदिी एवं नबिंध' पुस्तक का अध्ययन भी लाभदायक होगा।
- सामान्य अध्ययन के प्रथम प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम में भारत का आधुनिक इतिहास और भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय महत्त्व का वर्तमान घटनाक्रम, सांख्यिकी विश्लेषण, आरेखन और चित्रण इत्यादि शामिल हैं।
- भारत का आधुनिक इतिहास और भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय महत्त्व के वर्तमान घटनाक्रम का अध्ययन बहिर राज्य विशेष के संदर्भ में करना प्रासंगिक है, क्योंकि इनसे संबंधित ज्ञादातर प्रश्न बहिर से जुड़े हुए होते हैं, जैसे- 1857 के विद्रोह में बहिर की भूमिका का वर्णन कीजिये? चंपारण सत्याग्रह, संधाल विद्रोह, मुंडा विद्रोह, भारत छोड़ो आंदोलन इत्यादि में बहिर की भूमिका से संबंधित प्रश्न अक्सर पूछे जाते रहे हैं।
- राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय महत्त्व के वर्तमान घटनाक्रम के अध्ययन के लिये इस खंड से संबंधित प्रारंभिक परीक्षा के लिये अपनाई गई रणनीति का वसितुत अध्ययन लाभदायक रहेगा।
- सांख्यिकीय विश्लेषण, आरेखन और चित्रण में वगित वर्षों में पूछे गए प्रश्नों का प्रतिदिन अभ्यास करना लाभदायक रहेगा। इसके लिये एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तक के साथ-साथ दृष्टि पब्लिकेशंस की बीपीएससी मेंस सक्सेज सीरीज की पुस्तक 'वज्जान एवं प्रौद्योगिकी तथा सांख्यिकी विश्लेषण, आरेखन और चित्रण' की सहायता ली जा सकती है।
- सामान्य अध्ययन के द्वितीय प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम में भारतीय राजव्यवस्था, भारतीय अर्थव्यवस्था और भारत का भूगोल, भारत के विकास में वज्जान एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका और प्रभाव शामिल हैं।
- इस प्रश्नपत्र के भी संपूर्ण पाठ्यक्रम का अध्ययन बहिर राज्य विशेष के संदर्भ में करना प्रासंगिक है, क्योंकि इनसे संबंधित ज्ञादातर प्रश्न बहिर से जुड़े हुए होते हैं। साथ ही तकनीक की उपयोगिता से संबंधित अनुप्रयोगात्मक प्रश्न भी पूछे जाते हैं। जैसे- भारत के संदर्भ में सुदूर संवेदी उपग्रह की उपयोगिता का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये। 4जी, 5जी तकनीक क्या है? दैनिक जीवन में इनकी क्या उपयोगिता है? इत्यादि।
- चूँकि अब वैकल्पिक वषिय को क्वालफाइंग कर दिया गया है अतः संबंधित वषिय के स्तरीय कतिाबों का अध्ययन करके बढिवार नोट्स एवं प्रश्नों की सनिोप्सिस तैयार करना लाभदायक होगा। इससे आप मुख्य परीक्षा के दौरान संपूर्ण पाठ्यक्रम का त्वरति अध्ययन कर सकते हैं।
- लेखन शैली एवं तारतम्यता का विकास नरिंतर अभ्यास से आता है, जिसके लिये वषिय की व्यापक समझ अनविर्य है।

अंतिम कषणों की रणनीति:

- परीक्षा से 4-5 दिनि पहले कुछ भी नया खंड या टॉपिक पढने से बचें, बल्कि आत्मविश्वास बनाए रखते हुए जो टॉपिक अब तक आपने पढा है, उसी का रवीज्जन करें व लेखन अभ्यास जारी रखें।
- प्रश्नपत्र के जसि खंड पर आपकी पकड़ मज़बूत हो, उसी खंड के प्रश्नों को पहले हल करने का प्रयास करें। इससे आपको मनोवैज्जानिक सपोर्ट व सकारात्मक माहौल मल्लिगा।
- प्रश्नों का उत्तर देते समय महत्त्वपूर्ण बढिुओं को रेखांकित करना न भूलें। इस क्रम में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि अति महत्त्वपूर्ण तथ्यों को ही रेखांकित करना है। इस क्रम में आयोग द्वारा जारी दिशा-नरिदेश का भी ध्यान रखें।

साक्षात्कार की रणनीति:

- साक्षात्कार किसी भी परीक्षा का अंतिम एवं महत्वपूर्ण चरण होता है। इसमें न तो प्रारंभिक परीक्षा की तरह सही उत्तर के लिये विकल्प दिये जाते हैं और न ही मुख्य परीक्षा के प्रश्नपत्रों की तरह प्रश्नों को हल करने की सुविधा होती है।
- अंकों की दृष्टि से कम, लेकिन अंतिम चयन एवं पद निर्धारण में इसका विशेष योगदान होता है।
- साक्षात्कार में किसी भी प्रश्न के लिये दिये गए उत्तर पर प्रत-प्रश्न पूछे जाने की संभावना भी बनी रहती है। आपके द्वारा दिये गए किसी भी गलत या हलके उत्तर का नगिटाव मार्कगि जैसा ही प्रभाव पड़ने की संभावना भी बनी रहती है। किसी भी उम्मीदवार के लिये साक्षात्कार के चरण की सबसे मुश्किल बात यह होती है कि प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा के विपरीत इसके लिये कोई नश्चिति पाठ्यक्रम निर्धारित नहीं है। यही वजह है कि साक्षात्कार के दौरान पूछे जाने वाले प्रश्नों का दायरा बहुत व्यापक होता है। अतः उम्मीदवारों को यह सवाल बार-बार परेशान करता है कि इतने कठिन चरण की तैयारी कैसे की जाए, क्या पढ़ा जाए और क्या नहीं? सिर्फ पढ़ा जाए या कतिबों से बाहर भी झाँका जाए? आत्मविश्वास कैसे बढ़ाया जाए? ऐसा व्यक्तित्व कैसे गढ़ा जाए कि सिर्फ आधे-एक घंटे के भीतर हम इंटरव्यू पैनल के सदस्यों को प्रभावित कर पाने में सफल हो जाएँ?
- इसके लिये सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि इंटरव्यू बोर्ड के सदस्य आखिर किस आधार पर उम्मीदवारों का मूल्यांकन करते हैं? क्या यह शरीर की बनावट और ड्रेसिंग से तय होता है? क्या सदस्य उम्मीदवार की भाषा-शैली और हाव-भाव से उसका मूल्यांकन करते हैं? क्या अंकों का सीधा संबंध उम्मीदवार के उत्तरों की गुणवत्ता से होता है? क्या जीवन और विभिन्न मुद्दों के प्रत-उम्मीदवार का नज़रिया इसमें केंद्रीय भूमिका निभाता है? इन सभी प्रश्नों के उचित जवाब देने एवं साक्षात्कार की सटीक तैयारी करने हेतु BPCS के 'साक्षात्कार की रणनीति' पर चर्चा की जा रही है।
- मुख्य परीक्षा में चयनित अभ्यर्थियों (सामान्यतः वज्रपत्त में वर्णित कुल रक्तियों की संख्या का लगभग 3 गुना) को सामान्यतः एक माह पश्चात् आयोग के समक्ष साक्षात्कार के लिये उपस्थित होना होता है।
- वर्तमान संशोधन के अनुसार बी.पी.एस.सी. में साक्षात्कार के लिये 120 अंक निर्धारित हैं (पूर्व में 150 अंक निर्धारित थे)। अंतिम चयन मुख्य परीक्षा एवं साक्षात्कार में प्राप्त कुल अंकों के आधार पर तैयार मेरिट लिस्ट के आधार पर होता है।

साक्षात्कार की तैयारी क्यों आवश्यक है?:

- सामान्यतः साक्षात्कार के लिये निर्धारित पैनल/बोर्ड में एक अध्यक्ष और 3-4 सदस्य होते हैं (पुरुष एवं महिला दोनों हो सकते हैं)। यह कह सकते हैं कि साक्षात्कार बोर्ड में उम्मीदवारों के ज्ञान, अभिव्यक्ति एवं भाषा-शैली, हाव-भाव, ड्रेसिंग सेंस, उत्तरों की गुणवत्ता एवं जीवन और विभिन्न मुद्दों के प्रत-उनके नक्षिक नज़रिया का संयुक्त रूप से प्रभाव पड़ता है, जो कि परीक्षा में उनके अंतिम चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालाँकि, यह दावा करना कठिन है कि इन सभी तत्वों का अनुपात क्या होगा? परायः हर उम्मीदवार के मामले में इनका अनुपात अलग-अलग हो सकता है। संभव है कि कोई उम्मीदवार तथ्यों में कमज़ोर हो, देखने में कम आकर्षक हो पर अपने सुलझे हुए दृष्टिकोण की बदौलत बोर्ड पर ठीक-ठाक प्रभाव कायम करने में सफल हो जाए। इसी तरह यह भी संभव है कि कोई उम्मीदवार अपने आकर्षक चेहरे, प्रभावी ड्रेसिंग कौशल तथा जादुई अभिव्यक्ति, सामर्थ्य के सहारे अपनी ज्ञान संबंधी कमियों को एक हद तक ढकने में कामयाब हो जाए।
- मुख्य परीक्षा देने के बाद परीक्षार्थियों को यह उम्मीद बनी रहती है कि उन्हें साक्षात्कार देने का अवसर अवश्य प्राप्त होगा। उनमें से कुछ मुख्य परीक्षा के तुरंत बाद ही साक्षात्कार की तैयारी शुरू कर देते हैं, जबकि कुछ मुख्य परीक्षा के परिणाम का इंतज़ार करते हैं और परीक्षा में सफल होने पर ही इंटरव्यू के बारे में सोचना शुरू करते हैं। वैसे तो व्यक्तित्व निर्माण के लिये कोई समय निर्धारित नहीं किया जा सकता, फरि भी यदि परीक्षा को ध्यान में रखते हुए इसकी मांग के अनुसार शुरू से ही इसका अभ्यास (छद्म साक्षात्कार) किया जाए तो साक्षात्कार के दिन स्वयं को सहज रखने में आसानी रहती है।
- सामान्यतः यह देखा जाता है कि अंतिम परिणाम में सिर्फ 1 अंक के अंतर से भी कई बार 10 या उससे अधिक रैंक का फर्क पड़ जाता है। इसलिये परीक्षा के इस चरण में भी यदि अभ्यर्थी व्यवस्थित तैयारी करता है तो अपने स्तर पर सामान्यतः मिलने वाले अंकों की तुलना में कुछ अंकों का इजाफा अवश्य कर लेता है।

साक्षात्कार की तैयारी हेतु रणनीतिके विधि पक्ष:

साक्षात्कार की तैयारी हेतु रणनीतिको मोटे तौर पर कुल 4 भागों में बाँटकर देख सकते हैं-

• ज्ञान पक्ष:

- सबसे पहले उन विषयों की सूची बना लीजिये, जो आपके बायोडाटा में दिखाई पड़ते हैं। इन विषयों में आपका वैकल्पिक विषय तो है ही, साथ ही सामान्य अध्ययन के प्रमुख खंड, आपकी अकादमिक पृष्ठभूमि के विषय, आपकी रुचियाँ, आपका गृह राज्य, गृह जनपद आदि सभी शामिल हैं।
- अपने बायोडाटा को बोर्ड सदस्य की नगिहा से कई बार पढ़िये और सोचिये कि उनकी नज़र कनि शब्दों पर टकि सकती है? ऐसे सभी शब्दों को

रेखांकित कर लीजिये और मानकर चलिये कि आपको उन सभी पर कसि-न-कसि मात्रा में तैयारी करने की ज़रूरत है। इसके बाद एक-एक करके वभिन्न विषयों को उठाइये और पूछे जा सकने वाले संभावित प्रश्नों की सूची बनाइये।

- सामान्यतः इस सूची को तीन भागों में बाँटकर तैयार किया जा सकता है- 1. अत्यधिक संभावित प्रश्न, 2. सामान्य संभावित प्रश्न, 3. कम संभावित प्रश्न। बेहतर होगा कि आप इन प्रश्नों की सूची बनाने में स्वयं के विक के साथ-साथ अपने उन साथियों को भी शामिल कर लें, जो आपके साथ इंटरव्यू की तैयारी कर रहे हैं और आपके विषय या क्षेत्र उनके बायोडेटा में भी शामिल हैं।
- अभ्यर्थियों को अपने वैकल्पिक विषय पर भी बहुआयामी दृष्टिकोण के साथ मज़बूत पकड़ रखनी होगी, क्योंकि साक्षात्कार में इस क्षेत्र से काफी सवाल पूछे जाते हैं, विशेषतः जब आपने वैकल्पिक विषय चुनते वक़्त अपने सनातक के विषय को छोड़कर अन्य स्टडीज के विषय को चुना हो। साथ ही आपकी अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय घटनाक्रम के साथ-साथ बहिर की समसामयिक घटनाओं पर भी अच्छी पकड़ होनी चाहिये और उम्मीदवार को इन सविलि सेवाओं तथा संबंधित पदों के बारे में स्पष्ट जानकारी होनी चाहिये।
- **दृष्टिकोण पक्ष:** आयोग उम्मीदवारों से अपेक्षा रखता है कि कसि भी विषय पर उनका दृष्टिकोण एकतरफा न होकर संतुलित तथा प्रगतशील हो। इसलिये आपको दनि-प्रतदिनि की चर्चाओं में उठने वाले विवादास्पद मुद्दों के दोनों पक्षों को गहराई से देखने का अभ्यास करते रहना चाहिये। आपके उत्तरों से यह भाव स्पष्ट होना चाहिये कि आप कसि भी विषय पर नरिणय करने से पहले अपनी तरक बुद्धिका सही उपयोग करते हैं, कसि के बहकावे या उकसावे में नहीं आते। इसके लिये विवादास्पद मुद्दों पर भी आपको अभ्यास करते रहने की नरितर ज़रूरत होती है।

• **अभिव्यक्ति पक्ष:**

- सरल भाषा में इसका अर्थ है कि उम्मीदवार अपनी बातों को इंटरव्यू बोर्ड के सामने कतिनी प्रभावशीलता के साथ प्रस्तुत करता है। उसकी शब्दावली, उच्चारण, उतार-चढ़ाव, शारीरिक अभिव्यक्तियाँ आदि वे पक्ष हैं, जो समग्र रूप में उसकी अभिव्यक्ति शैली को परिभाषित करते हैं।
- अभिव्यक्ति कौशल की भूमिका साक्षात्कार में ज़्यादा होती है। बहुत अच्छी अभिव्यक्तिगत क्षमता आपको 20-25% तक का फायदा पहुँचा सकती है।
- अगर उम्मीदवार अपने क्षेत्र से संबंधित या एकदम सरल प्रश्नों के उत्तर न दे पाए तो बोर्ड के सदस्यों पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना भी बनी रहती है।
- सबसे अधिक महत्त्व होता है उम्मीदवार के नज़रिये का अर्थात् कसि मुद्दे पर वह कतिने व्यापक और संतुलित तरीके से सोच पाता है, कसि नई और तात्कालिक समस्या को सुलझाने के लिये सही एवं त्वरित नरिणय कर पाता है या नहीं, मुद्दे के व्यावहारिक और सैद्धांतिक पक्षों तथा उनके अंतरसंबंधों को कतिनी गहराई से समझ पाता है, इत्यादि।
- इसके अलावा बोर्ड के समक्ष अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के दौरान आत्मवश्वास के साथ-साथ आई कॉन्टेक्ट बनाए रखना चाहिये और प्रश्नों का सीधा उत्तर देना चाहिये। जनि प्रश्नों का उत्तर आपको नहीं पता, आप शालीनता से सॉरी भी बोल सकते हैं। अतः बेहतर होगा कि तैयारी के शुरुआती चरण से ही इसका अभ्यास करते रहें और मुख्य परीक्षा के तुरंत बाद इस दिशा में गंभीर प्रयास शुरु कर दें।

• **वेशभूषा आदि की तैयारी:**

- एक औपचारिक बैठक के लिये व्यक्ति की जैसी वेशभूषा होनी चाहिये, वैसी ही वेशभूषा इंटरव्यू में अपेक्षित होती है। हालाँकि, आप अपनी सहजता का ध्यान रखें।
- इंटरव्यू में पुरुष उम्मीदवारों के लिये बेहतर होगा कि वे पूरी बाँहों की औपचारिक (Formal) देखने वाली कमीज़ (Shirt) पहनें और वैसी ही औपचारिक (Formal) पैट या ट्राउज़र्स को प्राथमिकता दें।
- कोट-पैट, ब्लेजर या सूट भी एक विकल्प है, जो सर्दी के मौसम में पहना जा सकता है। अगर आप सहज हैं तो सूट के साथ टाई लगानी चाहिये। फुटवियर का भी विशेष ध्यान रखें। भड़कीलेपन से बचें। अगर सहज हैं तो लेदर शूज़ का ही प्रयोग करें (सैंडलि भी एक विकल्प है)।
- महिला उम्मीदवार एक बार सूट के विकल्प पर विचार कर सकती हैं, हालाँकि बेहतर यही रहेगा कि वह साड़ी पहनें। सर्दी के मौसम में साड़ी के साथ ब्लेजर का भी उपयोग किया जा सकता है।

साक्षात्कार की तैयारी कैसे करें?

- वैसे तो साक्षात्कार की तैयारी परीक्षा के प्रत्येक स्तर पर स्वयं होती रहती है, बस ज़रूरत होती है तो बोर्ड के समक्ष ज्ञान और दृष्टिकोण के पक्ष के साथ-साथ अभिव्यक्ति पक्ष एवं वेश-भूषा के संतुलित होने की। अतः इन्हें भी मॉक इंटरव्यू (छद्म साक्षात्कार) द्वारा निःसंदेह बेहतर किया जा सकता है। इसके लिये उम्मीदवार स्वयं ही अपने तीन-चार मतिरों (यदि संभव हो तो साक्षात्कार देने वाले) के साथ गुरु डसिकेशन के माध्यम से अपनी तैयारी के सभी पक्षों का सटीक विश्लेषण कर सकते हैं। इसके अलावा वास्तविक साक्षात्कार के दनि आप सहज एवं आत्मवश्वास से युक्त हों,

उसके लिये आप दृष्टि संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन/ऑफलाइन मॉक इंटरव्यू में भाग ले सकते हैं, जसै वास्तवकि साक्षात्कार जैसे वातावरण में आयोजित किया जाता है। साथ ही अभ्यर्थी के इंटरव्यू की रकिर्डिंग को देखकर उन्हें उनकी कमज़ोरियों की पहचान कराते हुए उन्हें दूर करने हेतु महत्त्वपूर्ण सलाह/सुझाव दिया जाता है।

- दृष्टि मॉक इंटरव्यू के पश्चात् प्रत्येक अभ्यर्थी से उसके इंटरव्यू के संदर्भ में व्यक्तगित चर्चा की जाती है, जसिमें उनके मज़बूत और कमज़ोर पक्षों को बताया जाता है तथा उन कमज़ोरियों को दूर करने के उपाय भी सुझाए जाते हैं। दृष्टि मॉक टेस्ट इंटरव्यू में इस बात का वशिष अभ्यास करवाया जाता है कविवादास्पद मुद्दों पर अभ्यर्थी का नषिकर्ष संतुलति, प्रगतशील तथा समावेशी हो। अतः यह प्रक्रिया नश्चिति तौर पर बोर्ड के समक्ष जाने से पहले आपके आत्मवशिवास को बढ़ाने में सहायता करेगी।
- अंत में राज्य की प्रतिष्ठित परीक्षा के आखरी चरण में नर्वस होना स्वाभाविक है, फरि भी ऐसी स्थितिमें खुद पर वशिवास बनाए रखयि, स्वयं को रफ्रेश रखने के लिये संगीत, खेल गतविधियों में भाग लेने के साथ सामाजिक सरोकार वाली फलिमें भी देख सकते हैं। इसके अलावा एकाग्रता बनाए रखने के लिये मेडिटेशन और योग का सहारा भी ले सकते हैं।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/bpsc-strategy>

